(1)

B. A. History Hon's, Part-II

Paper: IV, Unit: II, Date: 7.10.2020 Lecture No:- 10

Session: जापान में मेइजी पुनर्स्थापना

मेइजी पुनर्स्थापना जापान के इतिहास का एक महत्वपूर्ण सीमा चिन्ह मा जाता है, जिसने जापान को मध्ययुगीन सामन्तवाद को नियंत्रित कर राष् राज्य के निर्माण के आधुनिक युग का सूत्रपात किया। गौरतलब है कि जापान अनेक सामन्ती इलाकों में विभाजित था और प्रत्येक गौरतलब सामंती कुल अपनी-अपनी जागीर में राजा की तरह शासन करता जापान में राजा और राजपद को दैवी माना जाता था किन्तु वास कार्यपालक शक्ति सामन्ती कुलों के हाथों में थी। सामन्ती कुल में अपनी-अपनी सैन्य शक्ति तथा प्रभाव बढ़ाने की प्रतिस्पर्द्धा रहती थ ताकि सम्राट को अपने प्रभाव में लाकर अन्य सामन्तों को नियंत्रित कि जा सके। इस सैन्य प्रतिस्पर्द्धा के कारण जापानी समाज में एक न सैन्य वर्ग का उदय हुआ, जिसे समुराई (योद्धा) कहा जाता था। अनेक समुराइयों ने भी कालान्तर में जागीरें हासिल की और उनका भी सामन् कुल बन गया। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में 17वीं सदी के प्रारम्भ में तोकुगावा कुल के मुखिया इयासु ने जापान के अन्य सभी सामन्तों पर अ नियंत्रण कायम कर जापान के सर्वोच्च कार्यकारी पद शोगुन पद को हा किया, जिसका अर्थ होता है - सर्वविजयी सेनानी। अब जापान का राजा उनके प्रभाव क्षेत्र में आ गया। इस तोकुगावा सामन्त कुल का दबदबा 1868 तक बना रहा और लगभग ढ़ाई सौ वर्षों तक शोगुन के पद पर तोकु कुल के सामन्ती ही बने रहे। 1868 में तोकुगावा शोगुनों की राजनीतिक शक्ति का अन्त जापानी सम्राट मुत्सुहितो के राज्याभिषेक के साथ हो गया और जापान की वास्तविक सत्ता सम्राट को वापस मिली जो जाप के इतिहास की अत्यन्त ही युगान्तरकारी घटना मानी जाती है। चूँकि इस घटना के द्वारा सम्राट की राज्यशक्ति की पुनर्स्थापना हुई थी औ नए सम्राट मुत्सुहितो ने राज्याभिषेक के समय 'मेइजी' की उपाधि ध की थी, अतः इस पूरे घटना क्रम को मेइजी पुनर्स्थापना के नाम से जाना जाता है।

मेइजी पुनर्स्थापना के अनेक कारण थे। सर्वप्रथम जिस प्रकार तोकुगावा कुल के शोगुनों ने अमेरिका और यूरोपीय दे को जापान में प्रवेश की अनुमति ही नहीं बल्कि व्यापारिक रियाय दी थी, वह जापान के आम लोगों तथा अन्य सामन्ती कुलों को नागव लगा। उन्होंने इस मुद्दे पर तोकुगावा शोगुनों का प्रबल प्रतिरोध/विरोध किया। फिर विदेशियों को जापानी घृणा की दृष्टि से देखते थे और जापा में उनकी बढ़ती मनमानी के लिए भी तोकुगावा शोगुनों को ही दोषी मानते थे।

इसी पृष्ठभूमि में 1867 में जब सम्राट मेइजी के नाम मुत्सुहितो का राज्याभिषेक हुआ, तो तोकुगावा शोगुन के प्रतिद्वन्द्वी सांमत कुलों के सामंत राजाओं ने तत्कालीन शोगुन को एक स्मार पत्र भेजा कि शोगुन शासन की शक्ति का अंत होना चाहिए ताकि सम्राट को राजशक्ति का स्वयं प्रयोग करने का अवसर मिल सके। उल्लेखनीय है कि सम्राट मेइजी के राज्यारोहण के समय उनकी आयु मात्र चौदह वर्ष की थी, किन्तु उसने किशोरावस्था में सम्राट बनने से पहले ही अपने देशवासियों को यह प्रतीत करा दिया था कि उसे जापान की राजनीतिक समस्याओं की बेहतर जानकारी है। इसी से उत्साहित होकर जब मेइजी का राज्याभिषेक हुआ तो उत्साहित होकर सत्सुमा, चोशू, तोसा, हीजन आदि सामन्ती कुलों के राजाओं ने शोगुन सरकार की राज्यशक्ति के अंत का स्मार पत्र भेजा था। संयोगवश तोकुगावा कुल का तत्कालीन शोगुन को अपना पदभार सम्हाले एक ही वर्ष हुआ था और वह एक संवेदनशील व्यक्ति था। वह स्वयं मानता था कि जापान का आधुनिकीकरण समय की मांग थी और यह कार्य सामन्तवादी व्यवस्था में संभव नहीं था। इसके लिए सर्वप्रथम सम्राट को शक्तिशाली बनाकर जापान को राष्ट्रीय राज्य बनाने की जरूरत थी। अतः शोगुन ने 1868 में अपने पद का त्याग कर दिया और इसके साथ ही जापान के उत्कर्ष एवं आधुनिकीकरण का मार्ग प्रशस्त हो गया, जिसे मेइजी पुनर्स्थापना का नाम दिया गया।

शोगुन के त्यागपत्र देने और राज्य शक्ति सम्राट के हाथों में आ जाने के बावजूद तत्काल समस्या का हल नहीं हुआ। शोगुन के अपने ही तोकुगावा कुल के अन्य सामन्त अपने राजनीतिक प्रभाव को खोना नहीं चाहते थे। वे सम्राट को पुनः अपने प्रभाव के अन्दर लाना चाहते थे जो तोकुगावा कुल के विरोधी के प्रभाव से सम्राट को मुक्त करने के लिए तोकुगावा कुल के सामन्तों ने समूह को राज परिवार क्योतो पर आक्रमण किया, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। अगले एक वर्ष तक वे अपनी खोयी शक्ति को पाने के लिए प्रयत्न करते रहे और अन्त में उन्होंने बदली हुई परिस्थिति को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार मेईजी पुनर्स्थापना प्रतिरोध रहित हो गया।

जब सम्राट ने शोगुन के बजाय अब अपने मंत्रिमंडल की सहायता से शासन कार्य सम्हाल लिया और जापान में एक राजनीतिक क्रान्ति हो गई और आधुनिकीकरण के रास्ते पर चलते हुए 19वीं सदी के अन्त तक आते-आते एशिया का एक छोटा सा देश जापान एक विश्वशक्ति बन गया और पहले एशिया के शक्तिशाली देश चीन को फिर यूरोप के दैत्य रूस को युद्ध में पराजित कर अपना डंका सारी दुनियाँ ने पीट दिया, जो मेइजी पुनर्स्थापना का दूरगामी परिणाम था।

☐ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर